Navchetana Homilies

March 24, 2019

Gen 11:1-9

Josh 7:10-15

Rom 8:12-17

Mt 21:33-44

उपवास काल का चौथा रविवार

St. Peter's Square में एकत्रित लोगों से पापा फ्रांसिस ने पूछा– "क्या आप लोग दान देते हैं?" सभी ने एक स्वर में चिल्लाया– "हाँ, हम देते हैं।" उन लोगों को उस भले काम के लिए अभिनंदन करने के बाद पापा ने उनसे पूछा– "क्या आप लोगों ने उन भिखारियों की आँखों को देखा है?" सब मौन रहे क्योंकि किसी ने भी उन आँखों को देखने की कोशिश नहीं की थी। पापा ने फिर पूछा– "क्या आपने उनके हाथों को छूआ है?" उस पर भी सब मौन रहे। तब पापा ने कहा– "जिन हाथों को आप लोगों ने नहीं छुआ, वह प्रभु येसु के ही हाथ थे।"

संत क्रिसोस्तों कहते हैं– "यह मत कहो– "मैं अपनी संपत्ती का उपयोग कर रहा हूँ, मैं अपने धन से ही मौज–मस्ती कर रहा हूँ।" यह संपत्ती आपकी अपनी नहीं है, वह गरीबों का धन है।"

आज के सुसमाचार में हमने दाखबारी के पट्टेदार लोगों का दृष्टांत सुना। वह नहीं चाहते थे कि फसल का जो हिस्सा मालिक को देना है वह उसे दें। इसके लिए वे दाखबारी के मालिक के सेवकों की पिटाई करके भगाते हैं और कुछ लोगों की हत्या भी करते हैं। अंत मे मालिक के पुत्र को देखकर बड़ी चालाकी से उसे भी मार डालते हैं। वे सोच रहे थे कि जब उत्तराधिकारी ही नहीं रहेगा तो दाखबारी उनकी ही रहेगी, और कोई फसल का हिस्सा मांगने नहीं आयेगा।

येसु ने यह दृष्टांत सुनाया था जब यहूदी नेता और पुरोहित ने येसु के अधिकार के बारे में प्रश्न उठाया था। उन लोगों ने अधिकार का प्रश्न इसलिए उठाया था कि येसु के सामने उनकी सत्ता और अधिकार डावाडोल होते जा रहे थे।

यह दृष्टांत सीधे उनपर प्रहार करता है। जैसे दृष्टांत में दाखबारी में काम करने वाले लोग मालिक के पुत्र को दाखबारी के बाहर ले जाकर मार डाला, उसी प्रकार ईश्वर की दाखबारी में काम करने के लिए नियुक्त महायाजक और नेता ईश्वर के पुत्र येसु को शहर के बाहर, कलवारी पहाड़ी पर, क्रूस पर चढ़कार मार डालते हैं।

हम यह न सोचे कि यह सिर्फ यहूदी नेतागण के लिए कहा गया दृष्टांत है। हम, जिसे ईश्वर ने अच्छी दाखबारी में बसाया है, सुख–संपत्ती दी है, इस दृष्टांत के बारे में सोचे। जैसे संत

पिता फ्रांसिस ने कहा था, जरूरत में पड़े इनसान की हम अनदेखी करते हैं, तो हम उस ईश्वर के पुत्र की ही अनदेखी करते हैं।

मेने एक दोस्त से यह प्रश्न पूछा– "मंदिर बनाने के लिए कोई अपनी ज़मीन क्यों नहीं देता? सार्वजनिक ज़मीन को ही घेरकर उसमें क्यों मंदिर बनाया जाता है?" उसने अच्छे से सोच–समझकर जवाब दिया– "मेरी ज़मीन ईश्वर ने मुझे दी है। सार्वजनीक ज़मीन ईश्वर की अपनी ज़मीन है। ईश्वर फिर क्यों मेरी ज़मीन पर बैठेगा?"

हम जमीन अपनी बनाकर ईश्वर को बाहर कर देते हैं। हम धन और संपत्ती को अपना कहकर ईश्वर को बाहर कर देते हैं।

जरूरत मंदों के लिए जब हम अपना दरवाजा बंद कर देते हैं, ईश्वर को ही हम बाहर कर देते हैं।

ईश्वर न्याय के दिन हमसे बस इतना ही पूछेगा– "मैं भूखा था क्या तुमने मुझे खिलाया?...., मैं प्यासा था, नंगा था, बेघर था.....तुमने क्या किया।" येसु का कथन है– "जो कुछ तुमने मेरे छोटे से छोटे भाईयों में से किसी एक के लिए नहीं किया, वह तुमने मेरे लिए ही नहीं किया।"

संत बेज़िल हमें चेतावनी देते हैं– "गरीबों की रोटी ही तुमने अपने गोदामों में बंद करके रखी है। जो गरीबी से नंगे है उनके कपड़े ही तुमने अपनी अलमारी में बंद करके रखे हैं। गरीबों का धन ही तुमने अपने खाते में भरा है।"

ईश्वर ने हमें जो दिया है, उसके हम मालिक नहीं, रखवाले हैं। ईश्वर, दाखबारी के मालिक के समान अपने सेवकों और पुत्र को ही हमारे पास भेजते हैं। हम उनके साथ कैसा व्यवहार करते हैं?

Fr. James ML CMI